

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यावसायिक अभिरुचि का तुलनात्मक अध्ययन



वन्दना पाण्डेय
(शिक्षाशास्त्र)
शिक्षक शिक्षा संकाय
नेहरू ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय
इलाहाबाद (उ0प्र0)

सारांश

अध्ययन में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यावसायिक अभिरुचि का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। उद्देश्य के रूप में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यावसायिक अभिरुचि की विमाओं का तुलना करना है। वर्तमान अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान विधि के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। प्रयागराज जनपद के व्यावसायिक शिक्षण प्रशिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत् छात्र-छात्राओं का जनसंख्या माना गया है। प्रस्तुत अध्ययन में में व्यावसायिक शिक्षण प्रशिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत् 200 विद्यार्थियों का चयन लिंग के आधार यादृच्छिक विधि से किया गया है। छात्र/छात्राओं में व्यावसायिक रूचि मापन हेतु डा० एस०पी० कुलश्रेष्ठ द्वारा निर्मित व्यावसायिक रूचि मापनी का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये— ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यावसायिक अभिरुचि की विमा साहित्यिक, प्रशासनिक, कला, राजनीतिक, कृषि, सामाजिक एवं गृह व्यवसाय अभिरुचि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में वैज्ञानिक, लघु व्यवसाय, वाणिज्यिक अभिरुचि शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक तथा शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में राजनीतिक अभिरुचि ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक है।

की—वर्ड— ग्रामीण, शहरी, माध्यमिक स्तर, विद्यार्थी, व्यावसायिक अभिरुचि

प्रस्तावना—

सभ्य जगत की वे सभी रचनायें जो आज हमें भव्य व आकर्षक प्रतीत होती हैं सब शिक्षा की ही देन है। शिक्षा ही सुसंस्कृत मानव को मानसिक, बौद्धिक, नैतिक, आध्यात्मिक एवं शारीरिक संतुष्टि प्रदान करती है। शिक्षा को सदैव से ही समाज तथा राष्ट्र के प्रगति की एक महत्वपूर्ण शक्ति साधन के रूप में शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। प्राथमिक शिक्षा जीवन का मूल है, माध्यमिक शिक्षा तना है तथा उच्च शिक्षा जीवन का विकासात्मक प्रसार है।

माध्यमिक शिक्षा मुख्य रूप से किशोर बच्चों की शिक्षा है, उनके भविष्य निर्माण की शिक्षा है, तथा अपने आप में एक पूर्ण इकाई होती है। इसलिये सर्वमान्य रूप से मानी गयी माध्यमिक शिक्षा विद्यार्थी के नाजुक भविष्य के निर्धारण का एक महत्वपूर्ण अंग है। माध्यमिक शिक्षा के पश्चात् विद्यार्थी व्यावसायिक जीवन में प्रवेश करता है तथा उसके जीवन में व्यक्तित्व निर्माण की विशेष प्रक्रिया होती है। माध्यमिक स्तर तक विद्यार्थी की किशोरावस्था विद्यमान रहती है। इस अवस्था में विकास की तीव्र प्रक्रिया के कारण जहाँ एक ओर छात्र-छात्राएँ आन्दोलित रहते हैं वही दूसरी ओर उनकी विभिन्न क्षमताओं का उच्चतम स्तर तक विकास होने की समस्या रहती है। इसलिये इस स्तर पर विभिन्न चरों के प्रभाव का अध्ययन अत्यन्त प्रासंगिक एवं महत्वपूर्ण हो जाता है। यदि विद्यार्थी की बौद्धिक योग्यता का ध्यान रखकर भविष्य निर्धारण किया जाये तो वह ज्यादा रुचि लेकर पढ़ेगा। एक किशोर न तो बालक होता है और न ही प्रौढ़। इस तथ्य को अध्यापक एवं अभिभावकगण प्रायः भुला दिया करते हैं। किशोर अवस्था में बालक एवं बालिकाओं के लक्षण समान नहीं होते हैं, लेकिन सीखने के बहुत से क्षेत्रों में बालक तथा बालिकाओं की क्षमता में अन्तर सामान्य रूप से देखा गया है अतः माध्यमिक स्तर पर छात्र-छात्राओं के इस अन्तर को समझने की महती आवश्यकता है जिससे वे अन्य समस्याओं को हल करने में सफल हो सकें।

आज के तकनीकी और वैज्ञानिक युग में आजीविका या रोटी की समस्या सम्पूर्ण वर्ग के मनुष्यों के सामने है। इस समस्या के निराकरण हेतु व्यक्ति किसी न किसी प्रकार का रोजगार करता है, परन्तु आवश्यकता यह है कि उसे अपने रोजगार में सफलता पाने के लिए उसका स्वयं का शिक्षित होना अपेक्षित है। इसमें भी यदि व्यवसाय से सम्बन्धित शिक्षा को रोजगारपरक प्रासंगिक तथा जीवनोपयोगी बनाने की दृष्टि से इस स्तर के अभिरुचि में व्यावसायिक शिक्षा का अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान है। हमारी परम्परागत शिक्षा प्रणाली में संज्ञानात्मक पक्ष, मानसिक तथा बौद्धिक पक्ष पर अधिक बल दिया जाता रहा है और संज्ञानेतर पक्ष (कौशलात्मक एवं भौतिक पक्ष) की प्रायः उपेक्षा होती रही है।

अतः अभिरुचि में व्यावसायिक शिक्षा के समावेश से छात्रों के विकास से सम्बद्ध पक्षों को सम्पुष्ट एवं समृद्ध करने में व्यावसायिक शिक्षा के अन्तर्गत विभिन्न व्यवसायों/समानोपयोगी उत्पादक कार्यों की शिक्षा विशेष रूप से उपयोगी एवं महत्वपूर्ण है।

अभिरुचियों को सामान्यतया उनके मापन और शिक्षा तथा व्यावसायिक क्षेत्रों में उनकी उपयोगिता के आधार पर जिन श्रेणियों में विभाजित किया जाता है वे हैं—संवेदनात्मक अभिरुचियाँ, मैकेनिकल अभिरुचियाँ, कलात्मक अभिरुचियाँ, व्यावसायिक अभिरुचियाँ तथा शैक्षिक अभिरुचियाँ। इन सभी प्रकार की अभिरुचियों के मापन हेतु भली-भाँति निर्मित अभिरुचि परीक्षा उपलब्ध है जिनका उपयोग कर हम सम्बन्धित अभिरुचियों का निदान उसी तरह कर सकते हैं जैसे— बुद्धि परीक्षणों से बुद्धि स्तर की जाँच की जाती है। अभिरुचि से तात्पर्य किसी क्षेत्र या कार्य विशेष को भली-भाँति सम्पादित करने से सम्बन्धित ऐसी समग्र विशिष्ट योग्यता या क्षमता से होता है जिसके निदान के आधार पर भविष्यवाणी करने में सहायता मिलती है कि अगर व्यक्ति विशेष को उस क्षेत्र में आगे बढ़ने से सम्बन्धित आवश्यक अवसर, प्रशिक्षण और सुविधाएँ प्राप्त हो जाए तो वह उसमें वांछित सफलता अर्जित कर सकता है। उदाहरण के लिए जब हम कहते हैं कि मोहन में शिक्षक— अभिरुचि है तो इसका तात्पर्य है कि मोहन में वह योग्यता और सामर्थ्य है कि अगर उसे शिक्षक बनने के उपयुक्त अवसर और प्रशिक्षण प्राप्त हो जाए तो वह एक कामयाब शिक्षक सिद्ध हो सकता है। किसी विशेष समय पर व्यक्ति में निहित किसी

प्रकार की अभिरुचि को उसकी जन्मजात शक्तियों तथा वातावरण के प्रभाव का सम्मिलित योगदान ही कहा जाना चाहिए। अभिरुचि जहाँ भावी सफलता की ओर संकेत करती है वही योग्यता केवल वर्तमान स्थिति में विद्यमान किसी कार्य या क्षेत्र विशेष सम्बन्धी कार्यक्षमता की परिचायक कहीं जाती है। बुद्धि से तात्पर्य व्यक्ति में निहित उसकी समग्र मानसिक योग्यताओं और सामर्थ्य से होता है जहाँ तक रुचि और अभिरुचि का प्रश्न है, किसी भी क्षेत्र या कार्य में आगे बढ़ने हेतु हमें दोनों ही चाहिए, परन्तु दोनों में अन्तर भी स्पष्ट है। हम किसी भी कार्य को करने में रुचि तो ले सकते हैं परन्तु यह जरूरी नहीं है कि हममें उससे सम्बन्धित आवश्यक अभिरुचि भी विद्यमान हो। अभिरुचि परीक्षणों का प्रयोग क्षेत्र काफी व्यापक है। इन्हें विभिन्न प्रकार के शिक्षण एवं व्यावसायिक कोर्सों हेतु विद्यार्थियों का चयन करने, विद्यार्थियों को शैक्षिक, व्यावसायिक एवं व्यक्तिगत, निर्देशन एवं परामर्श सेवाएँ प्रदान करने तथा जो जिसके लिए समर्थ है उसी के अनुभव जीवनोपयोगी क्रियाएँ तथा व्यवसायों का चुनाव करके आगे बढ़ाने में विशेष रूप से एक उपयुक्त साधन के रूप में प्रयुक्त किया जा सकता है और इस तरह उचित स्थान पर उचित व्यक्तियों के कार्य न करने से जो बर्बादी होती है उसे रोका जा सकता है।

समस्या कथन—

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यावसायिक अभिरुचि का तुलनात्मक अध्ययन।

उद्देश्य—

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्यों का अध्ययन किया गया है—

1. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यावसायिक अभिरुचि का तुलना करना।
2. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यावसायिक अभिरुचि की विमाओं का तुलना करना।

परिकल्पनाएँ—

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है—

1. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यावसायिक अभिरुचि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यावसायिक अभिरुचि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध विधि—

वर्तमान अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान विधि के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या

प्रयागराज जनपद के व्यावसायिक शिक्षण प्रशिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं का जनसंख्या माना गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में में व्यावसायिक शिक्षण प्रशिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत 200 विद्यार्थियों का चयन लिंग के आधार यादृच्छिक विधि से किया गया है।

प्रयुक्त उपकरण

छात्र/छात्राओं में व्यावसायिक रूचि मापन हेतु डा० एस०पी० कुलश्रेष्ठ द्वारा निर्मित व्यावसायिक रूचि मापनी का प्रयोग किया गया है। जिसमें कुल 200 कथन है। इसमें कुल दस विमाओं में विभाजित किया गया है, जो निम्नांकित है— 1. साहित्यिक, 2. वैज्ञानिक, 3. प्रशासनिक, 4. लघु व्यवसाय, 5. वाणिज्यिक, 6. कला, 7. कृषि, 8. राजनीतिक, 9. सामाजिक एवं 10. गृह व्यवसाय।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या—

1. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यावसायिक अभिरुचि का तुलना करना।

H₀₁ ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यावसायिक अभिरुचि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या—1

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यावसायिक अभिरुचि का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी—अनुपात

व्यावसायिक अभिरुचि	समूह	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	मध्यमानों का अन्तर (M ₁ —M ₂)	मानक त्रुटि (SE _D)	टी अनुपात (C R)
साहित्यिक क्षेत्र	ग्रामीण	100	10.79	3.32	0.68	0.52	1.32
	शहरी	100	10.11	3.96			
वैज्ञानिक क्षेत्र	ग्रामीण	100	11.81	4.07	1.81	0.53	3.41*
	शहरी	100	10.00	3.41			
प्रशासनिक क्षेत्र	ग्रामीण	100	11.30	2.84	0.30	0.53	0.56
	शहरी	100	11.00	4.47			
लघु व्यवसाय क्षेत्र	ग्रामीण	100	10.10	3.22	1.52	0.50	3.01*
	शहरी	100	8.58	3.87			
वाणिज्यिक क्षेत्र	ग्रामीण	100	11.36	3.50	2.64	0.58	4.55*
	शहरी	100	8.72	4.62			
कला क्षेत्र	ग्रामीण	100	9.98	3.30	0.66	0.57	1.16
	शहरी	100	10.64	4.62			
कृषि क्षेत्र	ग्रामीण	100	10.76	3.54	0.08	0.59	0.13
	शहरी	100	10.68	4.82			
राजनीतिक क्षेत्र	ग्रामीण	100	9.57	3.11	2.17	0.53	4.13*
	शहरी	100	11.74	4.24			
सामाजिक क्षेत्र	ग्रामीण	100	11.45	3.36	0.88	0.54	1.64
	शहरी	100	12.33	4.17			
गृह व्यवसाय क्षेत्र	ग्रामीण	100	11.83	3.10	0.64	0.57	1.13
	शहरी	100	11.19	4.76			

* .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक

व्याख्या-

तालिका संख्या 1 से स्पष्ट है कि ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यावसायिक अभिरुचि के अन्तर्गत साहित्यिक अभिरुचि का मध्यमान क्रमशः 10.79 एवं 10.11 तथा मानक विचलन क्रमशः 3.32 एवं 3.96 है। दोनों समूह के परिणित टी—अनुपात का मान 1.32 है जो कि .05 सार्थकता स्तर पर स्वायत्तता अंश ०० के लिए दिये गये सारणी मान 1.98 से कम है अर्थात् शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है अर्थात् ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यावसायिक अभिरुचि के अन्तर्गत साहित्यिक अभिरुचि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यावसायिक अभिरुचि के अन्तर्गत वैज्ञानिक अभिरुचि का मध्यमान क्रमशः 11.81 एवं 10.00 तथा मानक विचलन क्रमशः 4.07 एवं 3.41 है। दोनों समूह के परिणित टी—अनुपात का मान 3.41 है जो कि .05 सार्थकता स्तर पर स्वायत्तता अंश ०० के लिए दिये गये सारणी मान 1.98 से अधिक है अर्थात् शून्य परिकल्पना निरस्त की जाती है अर्थात् ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यावसायिक अभिरुचि के अन्तर्गत वैज्ञानिक अभिरुचि में सार्थक अन्तर है अर्थात् ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में वैज्ञानिक अभिरुचि शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक है।

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यावसायिक अभिरुचि के अन्तर्गत प्रशासनिक अभिरुचि का मध्यमान क्रमशः 11.30 एवं 11.00 तथा मानक विचलन क्रमशः 2.84 एवं 4.47 है। दोनों समूह के परिणित टी—अनुपात का मान 0.56 है जो कि .05 सार्थकता स्तर पर स्वायत्तता अंश ०० के लिए दिये गये सारणी मान 1.98 से कम है अर्थात् शून्य परिकल्पना निरस्त की जाती है अर्थात् ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यावसायिक अभिरुचि के अन्तर्गत प्रशासनिक अभिरुचि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यावसायिक अभिरुचि के अन्तर्गत लघु व्यवसाय अभिरुचि का मध्यमान क्रमशः 10.10 एवं 8.58 तथा मानक विचलन क्रमशः 3.22 एवं 3.89 है। दोनों समूह के परिणित टी—अनुपात का मान 3.01 है जो कि .05 सार्थकता स्तर पर स्वायत्तता अंश ०० के लिए दिये गये सारणी मान 1.98 से अधिक है अर्थात् शून्य परिकल्पना निरस्त की जाती है अर्थात् ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यावसायिक अभिरुचि के अन्तर्गत लघु व्यवसाय अभिरुचि में सार्थक अन्तर है अर्थात् ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में लघु व्यवसाय अभिरुचि शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक है।

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यावसायिक अभिरुचि के अन्तर्गत वाणिज्यिक अभिरुचि का मध्यमान क्रमशः 11.36 एवं 8.72 तथा मानक विचलन क्रमशः 3.50 एवं 4.62 है। दोनों समूह के परिणित टी—अनुपात का मान 4.55 है जो कि .05 सार्थकता स्तर पर स्वायत्तता अंश ०० के लिए दिये गये सारणी मान 1.98 से अधिक है अर्थात् शून्य परिकल्पना निरस्त की जाती है अर्थात् ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यावसायिक अभिरुचि के अन्तर्गत वाणिज्यिक अभिरुचि में सार्थक अन्तर है अर्थात् ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में वाणिज्यिक अभिरुचि शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक है।

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यावसायिक अभिरुचि के अन्तर्गत कला अभिरुचि का मध्यमान क्रमशः 9.98 एवं 10.64 तथा मानक विचलन क्रमशः 3.30 एवं 4.62 है। दोनों समूह के परिणामित टी—अनुपात का मान 1.16 है जो कि .05 सार्थकता स्तर पर स्वायत्तता अंश ०० के लिए दिये गये सारणी मान 1.98 से कम है अर्थात् शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है अर्थात् ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यावसायिक अभिरुचि के अन्तर्गत कला अभिरुचि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यावसायिक अभिरुचि के अन्तर्गत कृषि अभिरुचि का मध्यमान क्रमशः 10.76 एवं 10.68 तथा मानक विचलन क्रमशः 3.54 एवं 4.82 है। दोनों समूह के परिणामित टी—अनुपात का मान 0.13 है जो कि .05 सार्थकता स्तर पर स्वायत्तता अंश ०० के लिए दिये गये सारणी मान 1.98 से कम है अर्थात् शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है अर्थात् ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यावसायिक अभिरुचि के अन्तर्गत कृषि अभिरुचि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यावसायिक अभिरुचि के अन्तर्गत राजनीतिक अभिरुचि का मध्यमान क्रमशः 9.57 एवं 11.74 तथा मानक विचलन क्रमशः 3.11 एवं 4.24 है। दोनों समूह के परिणामित टी—अनुपात का मान 4.13 है जो कि .05 सार्थकता स्तर पर स्वायत्तता अंश ०० के लिए दिये गये सारणी मान 1.98 से कम है अर्थात् शून्य परिकल्पना निरस्त की जाती है अर्थात् ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यावसायिक अभिरुचि के अन्तर्गत राजनीतिक अभिरुचि में सार्थक अन्तर है अर्थात् शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में राजनीतिक अभिरुचि ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक है।

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यावसायिक अभिरुचि के अन्तर्गत सामाजिक अभिरुचि का मध्यमान क्रमशः 11.45 एवं 12.33 तथा मानक विचलन क्रमशः 3.36 एवं 4.17 है। दोनों समूह के परिणामित टी—अनुपात का मान 1.64 है जो कि .05 सार्थकता स्तर पर स्वायत्तता अंश ०० के लिए दिये गये सारणी मान 1.98 से कम है अर्थात् शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है अर्थात् ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यावसायिक अभिरुचि के अन्तर्गत सामाजिक अभिरुचि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यावसायिक अभिरुचि के अन्तर्गत गृह व्यवसाय अभिरुचि का मध्यमान क्रमशः 11.83 एवं 11.19 तथा मानक विचलन क्रमशः 3.10 एवं 4.76 है। दोनों समूह के परिणामित टी—अनुपात का मान 1.13 है जो कि .05 सार्थकता स्तर पर स्वायत्तता अंश ०० के लिए दिये गये सारणी मान 1.98 से कम है अर्थात् शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है अर्थात् ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यावसायिक अभिरुचि के अन्तर्गत गृह अभिरुचि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अतः ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यावसायिक अभिरुचि के अन्तर्गत साहित्यिक, प्रशासनिक, कला, राजनीतिक, कृषि, सामाजिक एवं गृह व्यवसाय अभिरुचि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है जबकि ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में वैज्ञानिक, लघु व्यवसाय,

वाणिज्यिक अभिरुचि शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक तथा शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में राजनीतिक अभिरुचि ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक है।

निष्कर्ष—

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये—

- ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यावसायिक अभिरुचि की विमा साहित्यिक, प्रशासनिक, कला, राजनीतिक, कृषि, सामाजिक एवं गृह व्यवसाय अभिरुचि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में वैज्ञानिक, लघु व्यवसाय, वाणिज्यिक अभिरुचि शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक तथा शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में राजनीतिक अभिरुचि ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक है।

सुझाव—

शिक्षा की नित्य नयी चुनौतियों ने हमारी शिक्षा में आमूल—चूल परिवर्तन किया। वैश्विक प्रतिस्पर्धा तथा शैक्षिक संस्थानों की उत्कृष्टता ने शिक्षा जगत को विकासोन्मुख बनाया है। आज के युग में शिक्षा का स्वरूप बहुत व्यापक हो गया है। वही राष्ट्र समुन्नत हो सकता है जो अपने देश में आधुनिक शिक्षा की उत्कृष्टता को परिपूर्ण करेगा। इस विज्ञान के युग में व्यावसायिक शिक्षा के अभाव में कोई भी राष्ट्र समृद्ध नहीं हो सकता है। प्रत्येक राष्ट्र की यह संकल्पना होती है कि वहाँ पर आत्मनिर्भरता, सम्पन्नता और सशक्तता रहे। इन बिन्दुओं पर सफलता अर्जित करने का मूल मंत्र है, उत्कृष्ट व्यावसायिक शिक्षा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- पाण्डेय, अभिषेक (2011). माध्यमिक स्तर के छात्र—छात्राओं की व्यावसायिक अभिरुचि का तुलनात्मक, लघु शोध प्रबन्ध, डॉ राम मनोहर लोहिया अवधि विश्वविद्यालय, फैजाबाद
- पुष्पांजलि (2009), स्नातक स्तर के विद्यार्थियों का संवेगात्मक बुद्धि एवं व्यावसायिक अभिरुचियों का तुलनात्मक अध्ययन, फैजाबाद : एम0एड0 लघुशोध, नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय।
- ब्रुकाहार्ट, एम0 सुसान एण्ड वाल्श, एम0 जानेट (2006) द डायनमिक्स ऑफ मोटीवेशन एण्ड एफेट क्लासरूम एसेसमेंट्स इन मिडिल स्कूल सांइज एण्ड सोसल स्डीज, जर्नल आर्टिकल्स रिपोर्ट रिसर्च।
- भारद्वाज, एकता (2011). ए स्टडी ऑफ ऐकेडमी मोटिवेशन, वोकेशनल चाइस एण्ड लर्निंग स्टाइल ऑफ मनार्टी कम्यूनिटी स्टूडेन्ट्स (एस कान्स्टीट्यूशनली डिफाइन्ड). पी.एच—डी. थीसिस, चौधरी चरण सिंह यूनिवर्सिटी, मेरठ (उ0प्र0)
- मोहन्ती, डी0 (2000) 'स्कूल टाइप सॉइकेलॉजीकल डिफरेस्टिएयन एण्ड एचीवमेन्ट ऑफ ट्राइबल एण्ड नॉन ट्राइबल चिल्ड्रेन, पी0एच0डी0 शिक्षाशास्त्र, उत्कल यूनिवर्सिटी।
- लाल, छामू (2002) इफैक्टव ऑफ अचीवमेंट मोटिवेशन एण्ड सोशियो—इकोनॉमिक स्टेट्स ऑन स्पोर्ट्स परफार्मेन्स ऑफ स्पोर्ट्स वुमेन, पी0एच0डी0 फिजिकल एजूकेशन, बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी।